प्राकृत-भाषा की शब्दावली में बहुलता और विविधता

-प्रो. वीरसागर जैन

बहुलता और विविधता संपूर्ण भारतीय संस्कृति की आत्मा है। भारतीय संस्कृति के प्रत्येक अंग में ही हमें बहुलता और विविधता के प्रेरक दर्शन होते हैं। प्राकृत-साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है।

अपवाद ही क्या नहीं है, अपितु वह तो बहुलता और विविधता की अत्यधिक संपोषक भाषा है | यदि यह भी कह दिया जाए कि बहुलता और विविधता की संपोषक भाषा प्राकृत के समान संसार में दूसरी नहीं है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि इसके जैसी बहुलता और विविधता अन्यत्र नहीं पाई जाती है। प्राकृत भाषा का प्राथमिक शिक्षण ही 'बहुलं' सूत्र से प्रारम्भ होता है। प्राकृत भाषा एवं साहित्य के माध्यम से अपरम्पार बहुलता और विविधता में भी एकता की अनूठी शिक्षा सशक्त रूप में दी जा सकती है।

प्राकृत-साहित्य में बहुलता और विविधता की खोज अनेक दृष्टिकोणों से की जा सकती है- प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से, काव्य-विधा की दृष्टि से, भाषा-भेद की दृष्टि से, छन्दो-विधान की दृष्टि से भी; किन्तु अभी यहाँ हमारा ध्येय मात्र उसकी शब्दावली में बहुलता और विविधता का अनुसन्धान करना है।

प्राकृत-शब्दावली में भी हम मात्र दार्शनिक पारिभाषिक शब्दावली को ही ग्रहण करना चाहते हैं, जिसके विषय में माना जाता है कि उसका सर्वथा एक निश्चित ही अर्थ होता है, उसमें कोई विविधता होने की संभावना ही नहीं होती। किन्तु हमारे अध्ययन से यह भलीभाँति स्पष्ट होता है कि प्राकृत-कवियों ने ऐसे दार्शनिक पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग में भी अपने बहुलता और विविधतावादी प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है। यही कारण है कि प्राकृत-साहित्य में इन दार्शनिक पारिभाषिक शब्दों का भी प्रयोग विविध अर्थों में उपलब्ध होता है, एक ही शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में पाया जाता है। अनेक अर्थों में ही नहीं, परस्पर महान अन्तर रखने वाले अनेक अर्थों में भी पाया जाता है। कभी-कभी तो एक ही शब्द का प्रयोग ऐसे दो अर्थों में पाया जाता है जो परस्पर विरुद्ध-से ही होते हैं। प्राकृत-साहित्य की यह विशेषता जन-जन को मानों ऐसा सन्देश देती है कि एकरूपता का आग्रह छोड़ दो और विरोधी को भी स्वीकार करने की आदत डालो, शत्रु को भी मित्र समझने का दृष्टिकोण अपने में विकसित करो।

विरोधी के साथ भी समुचित समन्वय करके चलने की यह शिक्षा यद्यपि संपूर्ण भारतीय वाङ्मय में बारम्बार सशक्त रूप से दी गई है, किन्तु प्राकृत-साहित्य के कवियों ने इसे इतने सुन्दर एवं व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत किया है, वह भी दार्शनिक पारिभाषिक शब्दों के द्वारा भी, यह एक सुखद आश्चर्य का विषय है, किसी भी विद्वान समीक्षक का मन प्राकृत-कवियों की इस विशेषता पर मुग्ध हो सकता है।

प्राकृत भाषा को तुच्छ बताते हुए कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि उसमें एक शब्द के द्वारा अनेक अर्थों को कहने की क्षमता नहीं है, किन्तु ऐसा नहीं है | यहाँ भी ऐसा ही है, अपितु कहीं-कहीं तो यह शक्ति प्राकृत भाषा में ही कुछ विशेष दिखाई देती है | जैसे कि- संस्कृत में जो बात चरित, चरित्र, चारित्र -इन तीन शब्दों के द्वारा कही जाती है, उसे यहाँ केवल एक ही शब्द 'चरित्त' के द्वारा कहा जा सकता है | इसी प्रकार संस्कृत में जो बात सम,

शम, श्रम -इन तीन शब्दों के द्वारा कही जाती है, उसे यहाँ केवल एक ही शब्द 'सम' शब्द के द्वारा कहा जा सकता है |

प्राकृत-वाङ्मय में यद्यपि ऐसे शब्दों का एक विशाल भण्डार भरा है, तथापि विस्तारभय से यहाँ हम कतिपय विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों के ही प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं–

दंसणं - प्राकृत-साहित्य में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में हुआ है। कहीं सामान्यावलोकन रूप 'दर्शनोपयोग' इसका अर्थ है तो कहीं सम्यग्दर्शनरूप मोक्षमार्ग। इसी प्रकार इस शब्द का प्रयोग 'मत' या 'सम्प्रदाय' के अर्थ में भी हुआ है और पांचवें गुणस्थान में पाई जानी वाली 'दर्शन प्रतिमा' के अर्थ में भी हुआ है।

धम्मो - प्राकृत-साहित्य में इस शब्द का भी प्रयोग अनेक अर्थों में हुआ है | कहीं इसका अर्थ 'पुण्य' है और कहीं इसका अर्थ 'शुद्धोपयोग' है। इसी प्रकार कहीं इसका अर्थ 'कर्तव्य' है और कहीं इसका अर्थ 'धर्मद्रव्य' है।

देवो - प्राकृत-साहित्य में इस शब्द का प्रयोग भी मुख्यतया दो अर्थों में हुआ है। कहीं वीतराग-सर्वज्ञ अरिहन्तदेव को 'देव' शब्द से सम्बोधित किया गया है और कहीं स्वर्ग में रहने वाले देवगति के जीवों को देव कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि इन दोनों में बड़ा भारी अन्तर है।

गुण - प्राकृत-साहित्य में इस शब्द का प्रयोग भी अनेक अर्थों में पाया जाता है। कहीं इसका अर्थ द्रव्य के सहभावी गुण हैं और कहीं इसका अर्थ क्रमभावी पर्याय भी है। इसी प्रकार कहीं इसका अर्थ 'गुणव्रत' है तो कहीं 'गुणस्थान' भी है। इतना ही नहीं, कहीं-कहीं इस 'गुण' शब्द का अर्थ 'गुणा' (multiply) भी है।

समण - प्राकृत-साहित्य में इस शब्द का प्रयोग भी अनेक अर्थों में पाया जाता है। कहीं इसका अर्थ शमन है और कहीं इसका अर्थ श्रमण भी है।

सुत्त - प्राकृत-साहित्य में इस शब्द का प्रयोग भी अनेक अर्थों में पाया जाता है। कहीं इसका अर्थ सूत्र है और कहीं इसका अर्थ सूक्त भी है।

एकासन - प्राकृत-साहित्य में इस शब्द का प्रयोग भी अनेक अर्थों में पाया जाता है। कहीं इसका अर्थ एक बार भोजन करना है और कहीं इसका अर्थ एक आसन में रहना है।

इसी प्रकार के और भी सैंकड़ों शब्द खोजे जा सकते हैं | सबका विवरण कहाँ तक प्रस्तुत करें, कतिपय प्रमुख शब्दों और उनके अर्थों का सांकेतिक विवरण इस प्रकार है-

अधम्म - अधर्म द्रव्य / पाप / अकर्तव्य

उवजोगो - प्रयोग / चेतना-व्यापार

चरित्तं - साम्यभाव चारित्र / जीवन चरित्र

णाणं - ज्ञानगुण / ज्ञानपर्याय / सम्यग्ज्ञान

णाणी - आत्मा / सम्यग्ज्ञानी

मंदिर - चैत्यालय / घर या भवन

कम्म - कर्मकारक / क्रिया / कर्मपुद्गल

अहिंसा - दया / शुद्धोपयोग रूप वीतराग भाव

अणुभव - कर्मोदय / आत्मानुभूति

काल - कालद्रव्य / समय

समयो - आत्मा / दर्शन / द्रव्य / शुद्धात्मा

विकल्प - भेद / विचार तरंगें

मति - ज्ञान विशेष / बुद्धि

श्रुत (सुद)- ज्ञान विशेष / शास्त्र

भाव - गुण / पर्याय / कर्मजनित आत्मा के भाव

सिद्ध - निष्पन्न / मुक्त

पर्याय - भेद / अन्तर / परिणमन / अवस्था

श्रेणि (सेणि) - पंक्ति / सेना / ध्यानावस्था

उवयार - उपकार / उपचार

इस प्रकार हम देखते हैं कि दार्शनिक पारिभाषिक शब्दों में भी बहुलता और विविधता का समावेश कर प्राकृत-कवियों ने विश्व को विविधता में भी एकता का सुन्दर संदेश बड़े ही सशक्तरूप से दिया है। उनका यह प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण आधुनिक युग में तो और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है, क्योंकि आज सारा विश्व आतंकवाद जैसी विकराल समस्या से जूझ रहा है। इसके द्वारा मतभेद होने पर भी मनभेद न रखने की अथवा विरोधी से भी बंधुभाव रखने की उदार शिक्षा ग्रहण कर विश्व में शान्ति स्थापित की जा सकती है।